IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

डॉ० भीमराव अम्बेडकर का राष्ट्र दर्शन

कु० डॉली
डॉ वीरेंद्र सिंह
शोध निर्देशक
[1]शोध छात्रा
[2]एसोसिएट प्रोफेसर
[1,2]राजनीति विज्ञान विभाग
[1,2]एमoएमoएचo कॉलेज गाजियाबाद

सारांश

इस शोध पत्र का उद्देश्य डॉ. बी.आर. के विचारों और विचारों का आलोचनात्मक विश्लेषण करना है। राष्ट्र की अवधारणा पर डॉ. बी.आर. अम्बेडकर एक समाज सुधारक, न्यायविद् और राजनीतिक नेता के रूप में अपने अनुभवों से प्रेरित होकर, अम्बेडकर ने भारत के संदर्भ में राष्ट्रीयता की समझ में अद्वितीय अंतर्दृष्टि प्रदान की। उनके लेखन, भाषणों और सामाजिक सक्रियता की जांच करके, यह पेपर राष्ट्र-निर्माण, सामाजिक न्याय, समानता और राष्ट्र के भीतर हाशिए पर रहने वाले समुदायों के सामने आने वाली चुनौतियों पर अंबेडकर के दृष्टिकोण की पड़ताल करता है। यह शोध भारतीय राष्ट्र की पुनर्कल्पना में अंबेडकर के योगदान और समकालीन समाज पर उनके विचारों के निहितार्थ का विश्लेषण करने के लिए प्राथमिक और माध्यमिक स्रोतों पर आधारित है।

अंबेडकर का राष्ट्र दर्शन भारतीय संघर्ष के परिणाम के रूप में उत्पन्न हुआ था। उन्होंने समाज को रूपांतरित करने के लिए एक उत्प्रेरक रूप में काम किया था। उन्होंने व्यक्तिगत स्वतंत्रता और समानता के माध्यम से राष्ट्रीय एकता बढ़ाने की योजना बनाई। उन्होंने भारतीय समाज के लिए एक वर्गीय समाजवादी राष्ट्र दर्शन विकसित किया जो समाज के सभी वर्गों के लिए समान अधिकारों को सुनिश्चित करता है।

प्रस्तावना

डॉ. भीमराव आंबेडकर के राष्ट्र संबंधी विचार आज के समय में महत्वपूर्णता रखते हैं। वे अपने विचारों के माध्यम से सामाजिक न्याय, सामान्य समरसता, और मानवाधिकारों की महत्वता को प्रशंसा करते थे। उनके विचार आज भी दलितों, पिछड़े वर्गों, और सामाजिक रूप से पिछड़े लोगों के लिए मार्गदर्शन का कार्य करते हैं।

सामाजिक न्याय: आंबेडकर ने सामाजिक न्याय को बहुत महत्व दिया और दलितों के लिए उच्चतम सामाजिक और आर्थिक उन्नति को प्राथमिकता दी। उन्होंने सामाजिक जाति प्रथा के खिलाफ लड़ाई लड़ी और दलितों को समानता की दिशा में प्रोत्साहित किया। आज भी उनके विचारों के आधार पर सामाजिक न्याय के लिए संघर्ष किया जाता है।

मानवाधिकार: आंबेडकर ने मानवाधिकारों के महत्व को समझाने और उनकी संरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए समर्पित थे। उन्होंने भारतीय संविधान के निर्माण में मानवाधिकारों को महत्वपूर्ण रूप से शामिल किया। उनकी इस सोच का महत्व आज भी है जब हम मानवाधिकारों के प्रति संवेदनशील होने की जरूरत समझते हैं।

शिक्षा: आंबेडकर ने शिक्षा को एक महत्वपूर्ण साधना बताया और सामाजिक रूप से पिछड़े लोगों को उच्च शिक्षा की सुविधा उपलब्ध कराने के लिए संघर्ष किया। उनकी इस योजना ने आज भी लोगों को शिक्षा की प्राप्ति के लिए प्रेरित किया है।

सामान्य समरसता: आंबेडकर ने सामाजिक और आर्थिक समरसता के लिए समर्पित अपने विचारों के माध्यम से एक समरस भारत के लिए लड़ाई लड़ी। उन्होंने विभाजनों और जातिवाद के खिलाफ समरसता के आदर्श को प्रोत्साहित किया। आज भी उनके विचारों ने हमें समरसता और एकता की महत्ता सिखाई है।

इन सभी विचारों के माध्यम से, डॉ. भीमराव आंबेडकर आज के समय में एक प्रेरणा स्रोत हैं। उनकी सोच और संघर्ष ने समाज में सुधार के लिए मार्ग प्रशस्त किया है और उनकी आत्मा को आज भी जीवित रखने में मदद करता है।

राष्ट्र

राष्ट्र" शब्द संस्कृत शब्द "राष्ट्रम्" से आया है, जिसका अर्थ होता है "जनसमूह" या "राष्ट्रीय समूह"। राष्ट्र एक विशिष्ट समूह का संगठित रूप होता है जो एक साझा भूमि, भाषा, संस्कृति और संगठन आदि के आधार पर एकता का अनुभव करता है। राष्ट्र के सदस्य लोग एक-दूसरे से संबंधित होते हैं और उन्हें एक संयुक्त अभिवृद्धि की आवश्यकता होती है।

राष्ट्र का अर्थ विभिन्न हो सकता है जैसे कि एक देश के रूप में, जिसमें एक संयुक्त संविधान, संस्थाओं और संरचनाओं के द्वारा लोगों को संगठित किया जाता है। राष्ट्र को एक भावना भी माना जाता है, जो लोगों के मन में उत्पन्न होती है जब वे अपने देश या समूह के साथ जुड़े होते हैं।

"राष्ट्र" शब्द का अर्थ विभिन्न संदर्भों में अलग-अलग होता है, लेकिन आमतौर पर यह किसी भी देश या राज्य के लोगों या नागरिकों का एक समूह होता है जो एक ही भूमिका, एकता, संयम, और स्वतंत्रता के साथ जुड़े हुए होते हैं। राष्ट्र के सदस्य एक विशिष्ट स्थान, संस्कृति, भाषा, और इतिहास के साथ जुड़े होते हैं। राष्ट्र एक स्वतंत्र देश की भूमि के अंदर भी हो सकता है जो अपनी संवैधानिक संरचना, राजनीति, और आर्थिक संरचना के साथ एक संपूर्ण इकाई होता है।

डॉ. भीमराव अंबेडकर एक महान समाजवादी, नैतिकता के प्रणेता, भारत के संविधान निर्माता और महापुरुष थे। उनका राष्ट्र दर्शन भारतीय समाज के लिए उत्तम विकल्पों का एक संयुक्त विवेचन है जो समाज को अंतर्निहित समस्याओं से मुक्त करने के लिए उन्होंने विकसित किया था।

एक राष्ट्र किसी विशिष्ट योग्यता या गुण रखने वाले लोगों का एक वृहद समूह होता है। इसमे शामिल गुणों का आधार भाषा, परमपराएं, प्रथाएं, आदते और नरजातीयता हो सकती हैँ अतः शब्द राष्ट्र एक वैदिक मूल्यों में निहित हें। यह लोगों की मानसिकता,जीवन के प्रति उनके दृष्टिकोण, प्रकृति ये ब्रह्माण के साथ सम्बन्ध, इतिहास और परम्परा के प्रति दृष्टिकोण को दर्शाता हें ।

शोध के उदेश्य

1. डॉ बी०आर० अंबेडकर के राष्ट्र सम्बन्धी व राष्ट्रवादी विचारों का अध्ययन ।
2. डॉ बी०आर० अंबेडकर के राष्ट्र सम्बन्धी व राष्ट्रवादी विचारों को आधुनिक भारत के परिपेक्ष में मूल्यांकन करना।

डॉ० बी० आर० अंबेडकर के राष्ट्र संबंधी विचार

एक राष्ट्र के रूप में भारत को अंबेडकर ने नहीं स्वीकारा बल्कि वह उसे राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में कार्यरत के रूप में स्वीकारते हैं डॉ बी आर अंबेडकर का कहना है कि "जो लोग हजारों जातियों के आधार पर एक दूसरे से बटे हुए हो वह स्वयं को एक राष्ट्र कैसे कह सकते हें? "जातियां स्वयं में गैर राष्ट्रवादी या राष्ट्र विरोधी है सर्वप्रथम तो इसलिए क्योंकि वह सामाजिक जीवन में बटवारा लाती हैं इसके अतिरिक्त जातिया इसलिए भी राष्ट्र विरोधी है क्योंकि वह विभिन्न जातियों के मध्य , बैरभाव , द्वेषभाव व जलन का भाव उत्पन्न करती है डॉ अंबेडकर बताते हैं कि जैसे समाजशास्त्री कहते हैं हिंदुओं के अंतर्गत एक चेतना का अभाव है प्रत्येक हिंदू की चेतना वही है जो उसकी जाति की चेतना है यही कारण है कि हिंदुओं को एक समाज या राष्ट्र नहीं कहा जा सकता।"

राष्ट्रवाद

राष्ट्रवाद का उदय अट्ठारहवीं और उन्नीसवीं सदी में युरोप में हुआ, लेकिन अपने केवल दो सौ - ढाई सौ साल पुराने ज्ञात इतिहास के बाद यह विचार आज भी बेहद शक्तिशाली और प्रासंगिक है। राष्ट्रवाद के प्रतिपादक जॉन गॉटफ्रेड हर्डर थे, जिन्होंने 18वीं सदी में पहली बार इस शब्द का प्रयोग करके जर्मन राष्ट्रवाद की नींव डाली। उस समय यह सिद्धान्त दिया गया कि राष्ट्र केवल समान भाषा, नस्ल, धर्म या क्षेत्र से बनता है। किन्तु, जब भी इस आधार पर समरूपता स्थापित करने की कोशिश की गई तो तनाव एवं उग्रता को बल मिला। राष्ट्रवाद एक भावना है जो किसी देश के नागरिक अपने देश की जमीन के साथ रखते है चाहे वो उस देश किसी भी भू-भाग में रहे, वो भावना उन सभी को एक बंधन में बांधकर रखती है। साधारण शब्दो में कहे तो राष्ट्रवाद एक भावना है। राष्ट्रवाद अपने राष्ट्र के प्रति प्रेम है। राष्ट्रवाद अपने भौगोलिक, सांस्कृतिक और समाज मई रहने वाले लोगों में प्रेम और एकता की भावना है। यह ऐसे भावना है, जो पूरे विश्व के हर देश के लोगो में भावना के रूप में रहती है। ऐसा माना जाता है कि इसका विकास आधुनिक विश्व में राजनीतिक पुनर्जागरण का परिणाम है।

राष्ट्रवाद मन की एक स्थिति है, यह एक विचार तथा वैचारिक शक्ति है, जो मनुष्य के दिमाग और दिल को नए विचारो एवं नयी भावनाओं से भर देती है और उसे चेतना को संगठित कार्यवाही की दिशा में ले जाने के लिए प्रेरित करती है। भारतीय संस्कृति में अनेक विवधताओं के बावज़ूद सम्पूर्ण भारतीय इतिहास में बुनियादी एकता के दर्शन होते है। नेहरू जी के राष्ट्रवाद का मूल मंत्र है- सांस्कृतिक बहुलवाद और संश्लेषण। नेहरू जी ने रविंद्र नाथ टैगोर के संश्लेषणात्मक सार्वभौमवाद को अपने राष्ट्रवाद का आधार बनाया। नेहरू जी ने राष्ट्रवाद के भावात्मक पक्ष पर विशेष बल दिया। अपनी विख्यात कृति ' भारत एक खोज ' के अंतर्गत उन्होंने राष्ट्रवाद कि अत्यंत मोहक और युक्तिसंगत परिभाषा दी है "राष्ट्रवाद वस्तुत: अतीत कि उपलब्धियों, परम्पराओं और अनुभवों की सामूहिक स्मृति है। आज के युग में राष्ट्रवाद की भावना इतनी सुदृढ़ हो गयी है, जितनी पहले कभी नहीं थी, जब कभी कोई संकट पैदा हुआ है। हमारा राष्ट्रवाद फिर से उभरकर सामने आया है। और लोगो ने अपनी पुरानी परम्पराओं में आनद और शक्ति की तलाश की है। वर्तमान युग की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है- अपने खोए हुए अतीत की फिर से खोज।"

डॉ० बी० आर० अंबेडकर के अनुसार राष्ट्र का परिपेक्ष्य

डॉक्टर बी आर अंबेडकर तर्क प्रस्तुत करते हैं कि वेश, भाषा तथा देश किसी राष्ट्र के उदय के लिए काफी नहीं है रेनन को उल्लेखित करते हुए डॉ आंबेडकर तर्क देते हैं कि एक राष्ट्र एक जीवित आत्मा होता है एक आध्यात्मिक सिद्धांत। दो चीजें जोकि वास्तविकता में एक ही है इस आत्मा का निर्माण करती है इस आध्यात्मिक सिद्धांत का निर्माण करती है एक भूतकाल में है और दूसरी वर्तमान में अंबेडकर कहते हैं एक राष्ट्र व्यक्ति की भांति ही प्रयासो, योगो एवं श्रद्धा का लम्बा इतिहास होता हैं ।

डॉ. बी.आर. अम्बेडकर के राष्ट्रदर्शन के मूल सिद्धांत

समानता (Equality): अम्बेडकर का मूल मंत्र "जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।" था, इससे उन्होंने यह सिद्ध किया कि समानता ही सभी लोगों की बुनियादी अधिकार होती है। उन्होंने समानता को स्वतंत्रता, न्याय और भाईचारे के साथ जोड़ा।

स्वतंत्रता (Liberty): अम्बेडकर के अनुसार, स्वतंत्रता समानता का अंग है। यह स्वतंत्रता सोचने, बोलने, लिखने, धर्म और संप्रदाय के आधार पर अपनी ज़िम्मेदारियों को निभाने का अधिकार शामिल है।

भाईचारा (Fraternity): अम्बेडकर के अनुसार, समानता और स्वतंत्रता सिर्फ तब संभव हैं, जब हम समुदाय के सदस्यों के बीच भाईचारे की भावना को समझते हैं।

न्याय: अम्बेडकर ने न्याय को अपने राष्ट्रदर्शन के मूल सिद्धांतों में से एक माना है। उन्होंने न्याय को समान अधिकारों, समान अवसरों और समान व्यवहार के साथ जोड़ा।

शिक्षा: अम्बेडकर ने शिक्षा को एक महत्वपूर्ण सिद्धांत के रूप में देखा। उन्होंने शिक्षा को आधुनिक भारतीय समाज के विकास का एक महत्वपूर्ण साधन माना था।

डॉ0 बी0 आर0 आंबेडकर के राष्ट्र सम्बन्धी व राष्ट्रवादी विचारधारा

डॉ0 बी0 आर0 आंबेडकर के विचारो में राष्ट्रवादी विचारधारा बखूबी देखी जा सकती है वे आदि से अंत तक राष्ट्र भाव से भरे थे। देश का संविधान लिखते हुए उन्होंने समाज में प्रचलित सामाजिक कुरीतियों का विनाश करने के लिए विभिन्न अधिकारों को भारतीय संविधान में समाहित किया जैसे कि -अनुच्छेद 14:- कानून के समक्ष समानता, अनुच्छेद 17:- अस्पृश्यता का उन्मूलन, अनुच्छेद नं 19:- “अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, अनुच्छेद 25 धार्मिक स्वतंत्रता इत्यादि।

बाबा साहेब की विचारधारा देश को एक सूत्र में पिरोने वाली थी ताकि एक सच्चे व समतामूलक राष्ट्र का निर्माण किया जा सके। इनका सारा जीवन राष्ट्र को समर्पित रहा। बाबा साहेब ने विषम परिश्थितियों में सघर्ष करते हुए राष्ट्र हित में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

डॉ0 बी0 आर0 आंबेडकर का मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति के विरोध में राष्ट्रीय दृष्टिकोण

डॉ0 बी0 आर0 अंबेडकर का यह विचार था कि देश के अंदर किसी भी व्यक्ति के साथ अत्याचार न हो और तुष्टिकरण को किसी भी हद तक बर्दाश न किया जाये। लेकिन मुसलमानों को ललाइत करने की वजह से देश को एक घातक मोड़ पर आ जाना पड़ा। गाँधी और कांग्रेस मुसलमानों को अधिक से अधिक अधिकारों और प्रतिनिधित्व देकर उन्हें संतुष्ट करने की नीतियों पर विचार कर रहे थे। डॉ0 बी0 आर0 आंबेडकर के सामने समाज के पिछड़े लोगों के उत्थान का सवाल था। एक ओर मुस्लिम लीग के द्वारा पाकिस्तान की मांग और अधिक से अधिक अधिकार मांगने वाले मुसलमानों तथा ओर कांग्रेस का अस्पशठ होना देश को अत्यंत सवेंदनशील स्थिति में ले आया था लेकिन तुष्टिकरण की नीति के विरोधी होने कारण और एक सच्चे राष्ट्रवादी होने के नाते डॉ बी आर आंबेडकर ने लखनऊ पैक्ट , जिसके आधार पर मुसलमानों को सीटों का आरक्षण पहली बार मिला था और नेहरू समिति की रिपोर्ट की निंदा की। "बहिष्कृत भारत" में लिखे एक लेख में उन्होंने कहा कि जिस योजनाओं से हिन्दुओं को नुकसान या आहित होता हो वह योजना किस काम की, उन्होंने कहा था कि वह अस्पर्श के अधिकारों का हनन हैं। क्योकि उससे हिन्दुओं को खतरा हैं और सारा हिंदुस्तान उससे भविष्य में मुसीबत में पड़ सकता है।

डॉ ० बी ० आर ० आंबेडकर ने राष्ट्र निर्माण की कई प्रक्रिया को अपने जीवन काल में देखा था। जिससे उनमे राष्ट्रवाद की भावना का उद्गम हुआ। डॉ ० बी ० आर ० आंबेडकर के राष्ट्रवादी भावना से हमारे संविधान निर्माण की प्रक्रिया को कई रूप में प्रभावित किया और देश को एक सटीक राष्ट्रवाद की तरफ अग्रसर किया

आंबेडकर का राष्ट्रवाद सामाजिक एकता से जुड़ा

आंबेडकर का राष्ट्रवाद असल में सामाजिक एकता की भावना से सम्बंधित ह। आंबेडकर मानते हैं कि कोई भी राष्ट्र तब तक मजबूत नहीं हो सकता जब तक कि वह सामाजिक रूप से एक ना हो। क्योकि आंबेडकर राष्ट्रवाद और सामाजिक एकता को एक दूसरे का पूरक मानते है। राष्ट्रवाद के लिए सामाजिक एकता जरूरी है और सामाजिक एकता के लिए राष्ट्रवादी विचार भावना का होना आवयश्यक है। दोनों एक दूसरे के बिना बहुत हद तक कमजोर है और अप्रासंगिक हैं और अस्वीकार्य है, आंबेडकर का राष्ट्रवाद उन सामाजिक आर्थिक सांस्कृतिक विषमताओं के प्रति सचेत व गंभीर राष्ट्रवाद है जो समय दर समय भारत की आम जनता की राष्ट्रीय चेतना को कम रहा था। यही कारण है की आंबेडकर ने कहा भी है कि हमें अपने राजनीतिक लोकतंत्र को एक सामाजिक लोकतंत्र भी बनाना चाहिए। राजनीतिक लोकतंत्र तब तक नहीं चल सकता जब तक कि उसके मूल में सामाजिक लोकतंत्र निहित न हो।

निष्कर्ष

डॉक्टर भीमराव अंबेडकर के द्वारा भारतीय संस्कृति की एकता को स्वीकारते हुए न केवल इसकी आलोचना का राष्ट्रीयकरण प्रस्तुत किया बल्कि भारत की राष्ट्रीयता की एकता को बनाए रखने के लिए प्रमुख सामाजिक, राजनीतिक व्यवहारिक दृष्टिकोणओं को प्रस्तुत किया। क्योंकि अंबेडकर का दार्शनिक विचार राष्ट्र को एकीकरण की अखंडता में बांधने के साथ साथ पिछड़े हुए एवं संवेदनशील समुदायों को मुख्यधारा से जोड़कर नए भारत की श्रेणियों का निर्माण करना था। जिसका माध्यम उन्होंने देश में सदियों से चली आ रही जातिवादी व्यवस्था पर प्रहार करना चुना और भारतीय संस्कृति में ही जातिवादी संगठनों को चुनौती देते हुए धर्म परिवर्तन कर भारतीय संस्कृति की मूल प्रस्तावना को समस्त विश्व के समक्ष एक संगठित समाज के रूप में प्रस्तुत किया। इसी चेतना को डॉ अंबेडकर के द्वारा भारत में नए राष्ट्र के निर्माण को बढ़ावा देने के लिए लोकतांत्रिक गतिविधियों के माध्यम से पिछले हुए समुदायों में जागरूकता और भविष्य के संदर्भ में शिक्षा का प्रभावी विकास कर नए राष्ट्रवाद का स्वरूप प्रस्तुत किया। क्योंकि उनका मानना था किसी भी देश को एक सूत्र में बांधने के लिए राष्ट्र की राष्ट्रवादी प्रवृत्ति वर्तमान के आयामों के साथ जुड़ी होनी चाहिए जिस देश में राष्ट्र के प्रति समरसता एकता और अखंडता का भाव बना रहे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. चक्रवर्ती, विद्युत; राजनीति, विचारधारा और राष्ट्रवाद: जिन्ना, सावरकर और अंबेडकर बनाम गांधी; सेज द्वारा प्रकाशित।
2. कीर, धनंजय; डॉ बाबा साहेब आंबेडकर का जीवन चरित्र; पॉपुलर प्रकाशन।
3. सिंह, मोहन, 2014. डॉ बी आर अंबेडकर व्यक्तित्व के कुछ पहलू: लोकभारती प्रकाशन।
4. अंबेडकर, बी आर, 1936, जाति प्रथा का विनाश
5. वर्मा, वी पी, 2020. आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन: लक्ष्मीनारायण अग्रवाल।
6. नागर, पुरुषोत्तम.आधुनिक भारतीय समाज एवं राजनीतिक विचार :राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।
7. ज़ेलियट, एलेनोर, 1996. अछूत से दलित तक: अंबेडकर आंदोलन पर निबंध; मनोहर पब्लिकेशन।